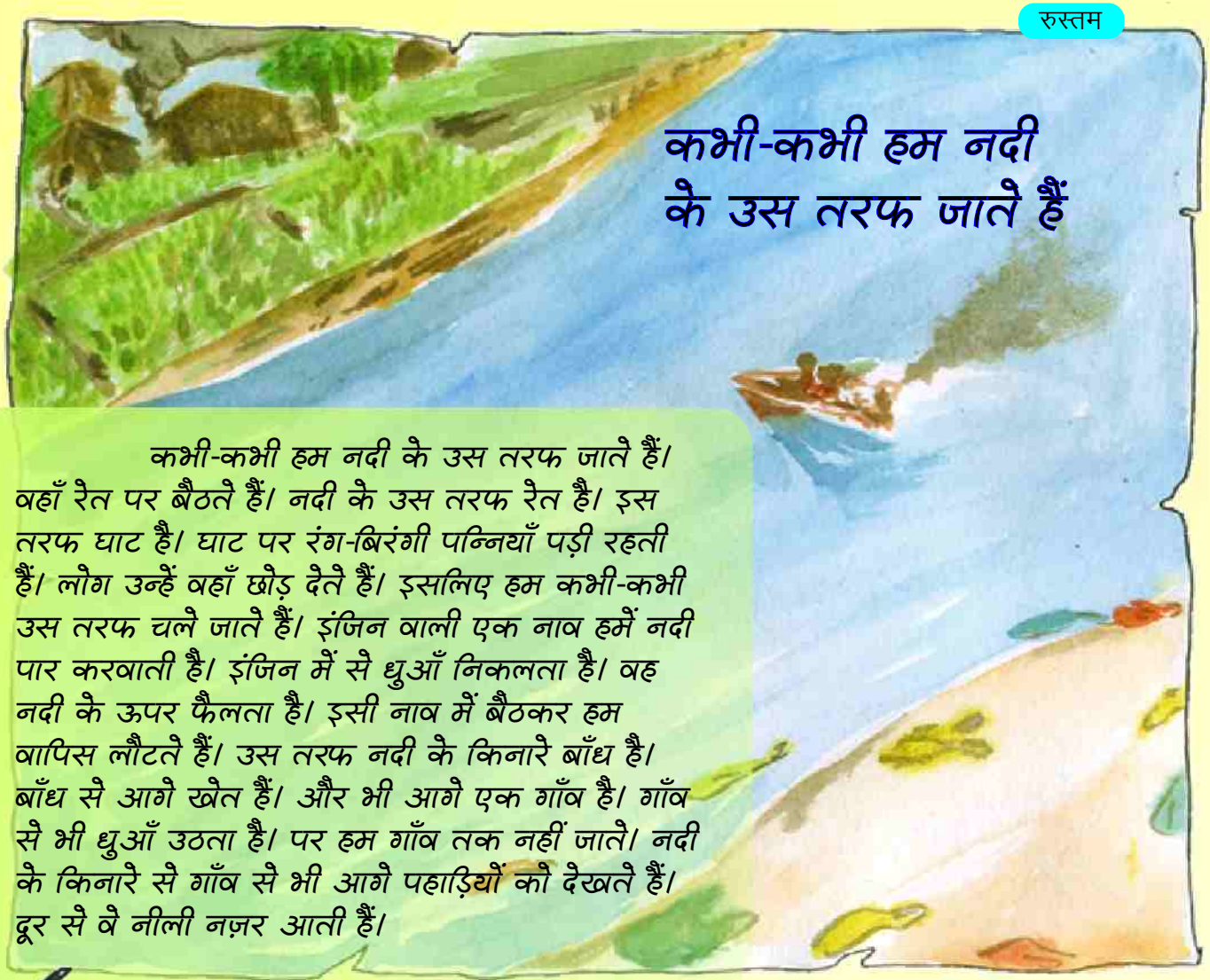

कभी-कभी हम नदी के उस तरफ जाते हैं

कभी-कभी हम नदी के उस तरफ जाते हैं। वहाँ रेत पर बैठते हैं। नदी के उस तरफ रेत है। इस तरफ घाट है। घाट पर रंग-बिरंगी पन्नियाँ पड़ी रहती हैं। लोग उन्हें वहाँ छोड़ देते हैं। इसलिए हम कभी-कभी उस तरफ चले जाते हैं। इंजिन वाली एक नाव हमें नदी पार करवाती है। इंजिन में से धुआँ निकलता है। वह नदी के ऊपर फैलता है। इसी नाव में बैठकर हम वापिस लौटते हैं। उस तरफ नदी के किनारे बाँध है। बाँध से आगे खेत हैं। और भी आगे एक गाँव है। गाँव से भी धुआँ उठता है। पर हम गाँव तक नहीं जाते। नदी के किनारे से गाँव से भी आगे पहाड़ियों को देखते हैं। दूर से वे नीली नज़र आती हैं।

गाय

एक गाय का चित्र खींचता हूँ। वह गली में रहती है, वहाँ जहाँ कचरे के ढेर हैं। दिन भर वहीं मँडराती है। तुमने भी तो देखा होगा उसे? कचरा जल रहा होता है। धुएँ और आग में भी वह थूथन डाल देती है, भोजन का कोई टुकड़ा बचाने के लिए। क्या-क्या नहीं खा लेती वह! कागज़ और प्लास्टिक की पन्नियाँ – ये भी उसका भोजन हैं। और भी बहुत सारी अपथ्य वस्तुएँ। उसकी आँखों में आशा नहीं है। देह भूखी-सूखी है। तब भी वह जुटी रहती है अपने जीवन को कुछ और आगे खींचने की कोशिश में। एक गाय का चित्र खींचता हूँ।

चित्रः कनक